THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

स्नातक स्तर के विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन व सृजनात्मकता का अध्ययन

डॉ. रेखा सोनी
(प्रोफेसर)
श्रीगंगानगर शिक्षक प्रशिक्षण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश :–

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य स्नातक स्तर के विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन व सृजनात्मकता का अध्ययन करना है। शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए दत्त संकलन हेतु स्व. निर्मित व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी,डॉ. बाकर मेहन्दी द्वारा रचित सृजनात्मकता परीक्षण, Dr. A.K.P. Sinha & R.P. Singh द्वारा समायोजन मापनी का उपकरण के रूप में प्रयोग किया है तथा निष्कर्ष में पाया कि अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थी सृजनात्मकता की क्षमता में लगभग समान है।

प्रस्तावना :–

मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ रोटी, कपड़ा और मकान हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसे किसी न किसी प्रकार के व्यवसाय, रोजगार की तलाश होती है और रोजगार की प्राप्ति की इसी तलाश की शुरूआत उसे विद्यार्थी जीवन से ही करनी पड़ती है। प्राचीन समय में आवश्यकताएँ सीमित होती थीं, इसलिए व्यक्ति को रोजगार की तलाश में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता था, लेकिन वर्तमान समय में जहाँ आवश्यकताओं का दायरा बढ़ता जा रहा है। जीवन में जटिलताएँ आ रही हैं तो व्यक्ति का अपने ही शहर में रहकर मनचाहा रोजगार (व्यवसाय) प्राप्त करना मुश्किल हो गया है। इसलिए वह अपने स्थान से दूर शहरों व अन्य संस्थानों में तकनीकी प्रशिक्षण हेतु जा रहा है। जहाँ उसे अनेक प्रकार के लोगों के साथ रहना पड़ता है, और इसके लिए उसे स्वस्थ अभिवृत्ति, समायोजन व तकनीकी समझ की आवश्यकता पड़ती है। फिर चाहे उसके प्रशिक्षण प्राप्ति का क्षेत्र शिक्षा हो, चिकित्सा हो या फिर अन्य कोई भी।

शोध की आवश्यकता व महत्व :–

कहा जाता है ईश्वर ने विद्यार्थी के कुछमहत्वपूर्ण लक्षणों को निर्धारित किया है जैसे– कोए जैसी चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, कुत्ते जैसी नींद, स्वल्पाहार और गृह त्याग आदि लेकिन गहराई से देखें तो इन लक्षणों की वर्तमान स्थिति क्या है? इससे हम सब

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

परिचित हैं क्योंकि आज का विद्यार्थी तो इन लक्षणों को भूल अपनी भारतीय संस्कृति से ही नाता तोड़ रहा है। वह तो अपने जीवन से संस्कार, मूल्य, स्वस्थ, अभिवृत्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आदर्श, समायोजन व परिश्रम जैसे गुणों को निकाल चुका है। अतः शोधकर्त्रीद्वारा प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से सबका ध्यान आज के विद्यार्थी वर्ग की तरफ आकर्षित करने का प्रयास है।इसलिये उसे यह शोधकार्य करने की आवश्यकता महसूस हुई और शायद इस शोध के माध्यम से अभिभावकगण, अध्यापकगण व अन्य समाजविद, शिक्षाविद अपने बच्चों की तरफ ध्यान देकर उन्हें अच्छा विद्यार्थी व देश का नागरिक बनाने में सफल हो सकें।

समस्या कथन :–

''स्नातक स्तर के विविध व्यावसायिकपाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन व सृजनात्मकता का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :–

शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध के निम्नलिखितउद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. चिकित्सकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरीव ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यवसायिकसमायोजन का अध्ययन करना।
3. अभियान्त्रिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँः–

प्रस्तुत शोधकार्य की परिकल्पनाएँ शोधकर्त्रीद्वारा इस प्रकार निर्धारित की गई हैं –

1. शिक्षक–प्रशिक्षक महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. चिकित्सकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यवसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अभियान्त्रिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्शः–

1. प्रस्तुत शोध में 600 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

2. इस शोध में शिक्षक–प्रशिक्षण व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षणार्थी 200 विद्यार्थी, चिकित्सकीय महाविद्यालयों के 200 विद्यार्थी तथा अभियांत्रिकी महाविद्यालय के 200 विद्यार्थियों को लिया गया है जिनमेंप्रत्येक व्यवसाय के ग्रामीण व शहरी छात्र व छात्राएँ शामिल हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

स्व. निर्मित व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी,

डॉ. बाकर मेहन्दी द्वारा रचित सृजनात्मकता परीक्षण

Dr. A.K.R. Sinha & R.P. Singh **द्वारा समायोजन मापनी**

शोध–अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध को राजस्थान राज्य के तीन सम्भागों के विभिन्न जिलों –जयपुर, जोधपुर व बीकानेर तक सीमित रखा गया है तथा प्रत्येक जिले के विभिन्न व्यवसायिक महाविद्यालयों को न्याद्रश हेतु चुना गया है।

तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण :–

अभिवृत्ति :– अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी भी कार्य,व्यवसाय, व्यक्ति दर्शन, वस्तु के प्रति मत, दृष्टिकोण या विचार से है।

व्यावसायिक प्रशिक्षणः– व्यावसायिक प्रशिक्षण से तात्पर्य है तकनीकी प्रशिक्षण जो व्यक्ति किसी व्यवसाय की प्राप्ति हेतु प्राप्त करता है।

समायोजन :– कोई भी परिस्थिति के प्रति अपने आपको अनूकूल बनाना, ढालना।

सृजनात्मकता :– कोई भी ऐसा नवीन कार्य जो समाजकी दृष्टि से उपयोगी हो तथा मौलिक हो सृजनात्मकता की श्रेणी में आता है।

सांख्यिकी :– प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीका प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान, 2. प्रमाप विचलन, 3. क्रान्तिक अनुपात

विश्लेषण :–

आंकड़े संकलन के पश्चात उनके आधार पर परिमाप व निष्कर्ष तभी प्राप्त किये जा सकते हैं जबकि उनको सही तरीके से विश्लेषित व सारणीबद्ध किया जाये इसलिये शोधकर्त्री द्वारा संकलित आंकड़ों को इस प्रकार विश्लेषित किया गया है।

''शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक विवरण''

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

सारणी संख्या – 1

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
शहरी	100	128.27	10.15	2.79
ग्रामीण	100	124.05	9.79	

व्याख्या :–

परिकल्पना से सम्बन्धित तालिका में दत्त विश्लेषण के अनुसार शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को प्रदर्शित करने वाले टी मूल्य 2.79 है जो कि तालिका के टी मान से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृति में सार्थक अन्तर है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

''चिकित्सकीय महाविद्यालयों में अध्ययरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यावसायिक समायोजन का तुलनात्मक विवरण''

सारिणी संख्या – 2

समायोजन	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
गृह समायोजन	शहरी 100	3.80	1.97	1.70
	ग्रामीण 100	4.33	1.92	
स्वास्थ्य समायोजन	शहरी 100	3.41	2.20	3.35
	ग्रामीण 100	4.65	2.38	
सामाजिक समायोजन	शहरी 100	6.73	2.58	4.39
	ग्रामीण 100	8.53	2.50	
भावात्मक समायोजन	शहरी 100	9.38	4.60	4.48
	ग्रामीण 100	12.52	4.03	
शैक्षिक समायोजन	शहरी 100	5.44	2.67	3.76
	ग्रामीण 100	7.06	2.70	

व्याख्या :–

उपरोक्ततालिका में परिकल्पना संख्या 2 से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण करने के पश्चात पाया गया कि चिकित्सकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन को प्रदर्शित करने वाले टी मान ''जिसमें गृह समायोजन सम्बन्धी टी मान टी तालिका के मान से कम है। अतः कहा जा सकता है कि

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

चिकित्सकीय महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है जबकि अन्य प्रकार के समायोजन सम्बन्धी टी मान टी के तालिका मान से अधिक है अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि चिकित्सकीय महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

''अभियान्त्रिकी महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक सृजनात्मकता का तुलनात्मक विवरण''

सारणी संख्या – 3

सृजनात्मकता के आयाम	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
प्रवाहशीलता	शहरी 100	10.84	3.83	0.73
	ग्रामीण 100	11.10	3.99	
लोचशीलता	शहरी 100	8.86	3.15	1.30
	ग्रामीण 100	9.54	3.28	
मौलिकता	शहरी 100	6.77	3.46	2.95
	ग्रामीण 100	8.12	3.33	

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी में अभियांत्रिकीमहाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता सम्बन्धी तथ्यों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें सृजनात्मकता के सभी आयामों सम्बन्धी टी मान टी तालिका के मान से कम है इससे स्पष्ट होता है कि उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत हुई है परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वेसंक्षेप में निम्न लिखित हैं–

1. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्तिमें अन्तर पाया गया है अर्थात् शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति समान नहीं है।
2. चिकित्सकीय महाविद्यालयों में अध्ययरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया गया है। जबकि समायोजन के अन्य

आयामों में शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में अन्तर पाया गया है अर्थात् उसमें समानता नहीं है।

3. अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थी सृजनात्मकता कीक्षमता में लगभग समान है।

शैक्षिक उपयोगिता :–

विद्यार्थी के जीवन मेंसकारात्मक अभिवृत्ति, समायोजन वसृजनात्मकता का बहुत महत्व है। अतःउपरोक्त तथ्यों से सम्बन्धित प्रस्तुत शोधकार्यके निष्कर्ष शिक्षा जगत हेतु अति उपयोगी हैं ।प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो से प्रेरित होकर जिनविद्यार्थीयों में सकारात्मक अभिवृत्ति,समायोजन व सृजनात्मकता का स्तर कमपाया गया है वे अपने में इन गुणों का विकासकर सकेंगे। साथ ही अभिभावकगगण वअध्यापकगण भी प्रेरित होकर अपने बच्चों मेंउपरोक्त श्रेष्ठ गुणों का विकास कर पायेंगे।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. इस शोध हेतु राजस्थान के अन्य स्थानों को भीचुना जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी न्यादर्श के रूप मेंचुना जा सकता है।
4. इस शोध को अन्य राज्यों के विभिन्न व्यवसायों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. शर्मा, आर.ए. (2011) : शिक्षा अनुसंधान के मूलतत्व एवं शोध प्रक्रिया, विनय रखेजा प्रकाशन, 216–217
2. शर्मा, गंगाराम, शर्मा, विवेक, शर्मा मुकेश (2006) : शिक्षा मनोविज्ञान, वेदान्त पबिल्केशन, लखनऊ, द्वितीय संस्करण 55–59, 250, 258, 260, 295
3. शर्मा, गंगाराम, भार्गव विवेक, शर्मा, मुकेश (2006) : शिक्षा मनोविज्ञान (अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया), एच.पी. भार्गव बुक हाऊस प्रकाशन, आगरा, द्वितीय संस्करण, 260–265
4. शर्मा, एस.एन. (1990) : आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, हरप्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा, पंचम संस्करण, 388–394
5. सुनिता, बी. एवं मयूरी के. (2000) : स्टडी ऑन एज जेण्डर डिफरेंसेंस ऑन द फैक्टर्स अफेक्टिंग हाई ऐकेडमिक अचीवमेंट, जर्नल ऑफ एप्लाइंड साइकोलॉजी 37, 31–39

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923

(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/

IMPACT FACTOR : 8.3

Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026